

द्विजातिमुष्यवृत्तीनां विधानं श्रूयतामिति (wie folgt) 3, 286. तौ च मामि-  
त्यवेचताम् (folgen die Worte) KATHA. 4, 94. उवाच तत्तको ब्रह्मवैतदि-  
त्यदुतं त्वयि MBh. 1, 1776. प्रत्युद्गम्याब्रुवन्वाक्यं प्रकृत्य इदं तदा ॥ ए-  
क्षाम्रमपदं रम्यं पश्यास्माकमिति प्रभो । तत्र पूजामवाप्याप्यां पुनरभ्याग-  
मिष्यसि ॥ R. 1, 9, 53. fg. आपो नारा इति प्रोक्ताः M. 1, 10, 11. 3, 109. 8,  
163. 165. u. s. w. यास्यत्याख्या भरत इति Çāk. 192. दिलीप इति (so ge-  
genannt) रत्नेन्दुः Ragh. 1, 12. तौ ब्रूयाद्भवतीत्येवं सुभगे भगिनीति er rede  
sie bhavati u. s. w. an M. 2, 129. मन्यते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति  
नः 8, 85. विधिरहे बलवानिति मे मतिः Hit. 1, 45. तर्कयामास भौमीति er  
dachte, dass es Bh. sei N. 16, 8. त्वं हि राजर्षिरिति विवरे Vīc. 7, 5.  
नाभिज्ञानामि भवेदेवं न वेति N. 20, 9. प्रज्ञामुक्तेः केन पथा प्रयातीत्यपेक्षतो  
वेदितुमस्ति शक्तिः Çāk. 153. क्षातुमर्हसि गत्वा त्वं किं करोतीति रावणः  
R. 6, 10, 8. (vgl. zu Çāk. 3, 9, 10, wo eine grosse Anzahl ähnlicher Bei-  
spiele zusammengestellt sind). अकथितो ऽपि ज्ञायते एव यथायमाभोगस्त-  
पोवनस्येति Çāk. 8, 1 (vgl. zu d. St.). अन्यदुक्तं ज्ञातमन्यदित्येतन्नोपपद्यते  
dass Eines gesäet würde und ein Anderes aufkäre, dieses findet nicht  
statt M. 9, 40. 10, 102. कुमारः शब्दवेधीति मया पापमिदं कृतम् dass ich  
als Jüngling nach dem blossen Laut (ohne das Ziel zu sehen) geschos-  
sen, dies ist das von mir vollbrachte Unrecht Daç. 1, 10. न धर्मशास्त्रं प-  
ठतीति कारणम् dass er das Gesetzbuch liest thut nichts zur Sache Hit.  
1, 15. उपाध्यायप्यजीवंस्तु कथं स्यादिति चेद्वेत् wenn die Frage aufge-  
worfen würde, wie sich derjenige, welcher durch Keines von Beiden zu  
leben vermag, sich zu verhalten habe, M. 10, 82. 12, 108. श्रेयस्त्वं वेति  
चेद्वेत् 10, 66. न च वैश्यस्य कामः स्यान्न रत्नेयं पश्यन्ति es komme den  
Vaicja nicht die Lust an, das Vieh nicht hüten zu wollen 9, 328. बालो  
ऽपि नावमत्तव्यो मनुष्य इति (indem man etwa bei sich denkt: er ist ein  
Mensch wie wir) भूमिपः 7, 8. नैता द्वयं परीक्षते नासौ वयसि संस्थितिः ।  
सुत्रयं वा वित्रयं वा पुमानित्येव (bei dem blossen Gedanken, dass er ein  
Mann sei) भुञ्जते 9, 14. वनात्तरे तोयमिति (in diesem Glauben) प्रधाविताः  
Rr. 1, 11. रत्नमिति न मे तस्मिन्मणौ प्रयासः nicht weil es ein Juwel ist  
Vīkr. 143. वत्सोत्सुकापि स्तिमिता सपर्यां प्रत्यग्रहीत्सेति नन्दतुप्तेति sie  
freuten sich darüber, dass Ragh. 2, 22. मा भूयाम्रमयीति परिमेषपुरःसैरा  
nur ein geringes Gefolge habend, damit die Einsiedelei nicht gestört  
würde 1, 37. स्वयं चोपचरिरे न मन्युर्मा स्म भवेदिति R. 1, 9, 69. मया ते  
ऽत्तर्कितं द्वयं न त्वां विच्युर्नाना इति damit dich die Leute nicht erkennen  
N. 14, 14. दातव्यमिति यद्दानं दीयते eine Gabe, die nur in der Absicht  
zu geben, gereicht wird Hit. 1, 14. त्वमम्बया पुत्र इति प्रतिगृहीतः du  
bist von meiner Mutter wie ein Sohn aufgenommen worden Çāk. 30, 3.  
Wie अयं am Anfange eines Abschnittes oder Werkes auf das Folgende  
hinweist, so इति am Ende auf das Vorangegangene: अयं शकुन्तलोपा-  
ख्यानम् so beginnt die Erzählung von der Çāk., इति श० so schliesst die  
Erz. von der Çāk. इत्यतः so, mit diesem Worte endigend P. 1, 2, 1, Sch.  
Bei Verben, die nennen, dafür halten, meinen, erkennen bedeuten, wird  
öfters nur das praed. durch इति hervorgehoben, das demnach neben  
dem Objects-acc. im nom. steht; bisweilen erscheint das praed. jedoch  
auch im acc.: अकन्येति तु यः कन्यां ब्रूयात् M. 8, 225. यामाहुः सर्वजीवप्र-  
कृतिरिति Çāk. 1. बुबुधे विकृतेति ताम् Ragh. 12, 39. मृग्याः परिभवा व्या-  
घ्रामित्येवेति त्वया कृतम् 37. राजर्षिरिति मां विदुः Vīc. 7, 8. अज्ञं हि

बालमित्याहुः पितेत्येव तु मन्त्रदम् M. 2, 153. कैवर्तमिति ये प्राहुः 10, 84.  
Bhag. 6, 2. तान् — ब्राह्म्यानिर्वाभिर्निर्दिशेत् M. 10, 20. अथर्मं धर्ममिति या  
मन्यते Bhag. 18, 32. R. 1, 9, 36. गुणानित्येव तान्विद्धि 2, 29, 2. इति wird  
auch gebraucht, um eine Anzahl von Subjecten zusammenzufassen:  
इत्याध्ययनदानानि तपः सत्यं तमा दमः । अलोभ इति मार्गी ऽयं धर्मस्याष्ट-  
विधः स्मृतः ॥ MBh. 3, 121. अनुमत्ता विशसिता निरुक्ता क्रयविक्रयी । सं-  
स्कर्ता चोपकर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥ M. 3, 51. दिष्ट्या शकुन्तला साधो  
सदपत्यमिदं भवान् । अद्वा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् ॥ Çāk. 188.  
Hit. 1, 33. AK. 3, 3, 38. H. 46. 308. Gerade so wird das pron. demonstr.  
gebraucht: ह्रीः श्रीः कीर्तिर्युतिः पुष्टिरुमा लक्ष्मीः सरस्वती । इमाः MBh.  
3, 1488. — 4) zum Ueberfluss schliesst sich an इति bisweilen noch ए-  
वम्, इव oder ein demonstr. pron. an: तौ ब्रूयाद्भवतीत्येवम् M. 2, 129.  
3, 88. 251. N. 15, 18. R. 1, 44, 130. Pāṇāt. 84, 7. इतीव — भृगं विनेदुः R.  
6, 74, 42. 2, 47, 12. 3, 3, 23. 53, 61. 4, 10, 36. Daç. 1, 49. Ragh. 12, 81; vgl.  
auch oben u. 2. इतीयं वैदिकी श्रुतिः M. 2, 15. MBh. 3, 121. R. 4, 30, 7.  
Daç. 1, 10. इत्येषा सृष्टिरादितः M. 1, 78. 5, 31. 7, 97. 9, 20. 40. 10, 102.  
11, 244. 247. 255. 12, 40. 126. Çāk. 70, 2. 90, 20. auch findet man इति  
verdoppelt: अवेत्यृचं जपेद्वद्वं यत्किंचेदमिति वा M. 11, 252. 251. 2, 76.  
Das in den Dramen als scenische Bemerkung so oft erscheinende इति  
तथा करोति ist nicht etwa als Pleonasmus aufzufassen; es bedeutet:  
nach diesen Worten thut er so. — 5) किमिति ist gleichbedeutend mit  
किम् weshalb, woher Pāṇāt. 257, 2. Hit. 27, 16. Çāk. 177. 36, 16. Kumā-  
ras. 2, 19. 5, 44. Amar. 36. 76. Çāṅgārāt. 5. 16. Vet. 26, 15. Ghaṭ. 13.  
Daçak. in Benf. Chr. 197, 22. — 6) इति कृत्वा aus diesem Grunde; in Be-  
tracht dessen, dass: सखेति कृत्वा तु सखे पृष्ट्वा वक्ष्याम्यहं त्वया da du  
mein Freund bist MBh. 1, 1522. गुरुपुत्रीति कृत्वाहं प्रत्याचने न दोषतः  
weil du die Tochter meines Lehrers bist 3272. 3, 725. 15, 290. 296. R. 4,  
8, 16. इति वै कृत्वा MBh. 3, 16980. — 7) इति कृ so viel als das einf. इति:  
इति कृ स्माह Çāṅk. Br. in Ind. St. 2, 309. अथ्यापयामास पितृन् शिशु-  
राङ्गिरसः कविः । पुत्रका इति क्वाच ज्ञानेन परिगृह्य तान् M. 2, 151. ए-  
तावानेव पुरुषो यज्ञायात्मा प्रवेति कृ 9, 45. स बाल इति क्वाच्यते Daç. 1,  
6. N. 4, 30. so nach der Uebertieferung P. 5, 4, 23. Sch. AK. 2, 7, 12. H.  
1837. Vgl. इतिहास und ऐतिह्य. — 8) इति verbindet sich mit dem  
Namen des Gewährsmannes zu einem adv. comp.: इतिपाणिनि so nach  
Pāṇini P. 2, 1, 6, Sch. इतिहृि Vor. 6, 61. — 9) eine verstümmelte Form  
ति findet sich Çāt. Br. 11, 6, 4, 3. fgg.: अस्तीह प्रायश्चित्तरस्तीति काति  
(का + ति für केति) पिता ते वेदेति; vgl. die Prakṛt-Form ति, ति. —  
Das इति heisst in der Grammatik इतिकरण RV. Pāṇ. 1, 19. Die Lexi-  
cographen erwähnen folgende Bedeutungen: इति हेतुप्रकारणप्रकर्षादि  
समातिषु AK. 3, 4, 32, 7. इति स्वल्पे सान्निध्ये विवक्षानियमे मते ॥ हेतौ  
प्रकारप्रत्यक्षप्रकाशे ऽप्यवधारणे । एवमर्थे समातौ H. an. 7, 21. 22. इति  
हेतौ प्रकाशने । निर्दर्शने प्रकारे स्यात्परकृत्यनुकर्षयोः । समातौ च प्रक-  
रणे ऽपि Msd. avj. 22. 23.

2. इति (von 3. इ) f. das Gehen, Sichbewegen: प्रासीवीङ्कृपत्र चतुष्प-  
दित्यै RV. 1, 124, 1. im comp. s. धुनेति, वारिति.

इतिक m. N. pr. gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. — Vgl. ऐतिकायन.

इतिकथ adj. und इतिकथा f. = अतिकथ und ०या Msd. th. 27: इतिकथा-  
पार्थवाच्यश्रद्धेयनष्टयोः.